जब, $B = R_f - P_f = 0$

तो भुगतान-शेष संतुलन में है।

जब, $R_f - P_f > 0$

तो इसका मतलब है कि विदेशियों को किए गए भुगतानों की अपेक्षा विदेशियों से हुई प्राप्तियाँ अधिक है और भुगतान-शेष में आधिक्य है।

जब $R_f - P_f < 0$

अथवा

$R_f < P_f$

तो भुगतान-शेष में घाटा है, क्योंकि विदेशियों को जो भुगतान किए गए है, वे विदेशियों से हुई प्राप्तियों से अधिक है।

यदि Net विदेशी उधार, तथा विदेशों में निवेश को मिला जाए, तो लोचदार विनिमय दर निर्यात को आयात से बढ़ा देती है। अन्य करेन्सियों के रूपों में घरेलू करेन्सियों का मूल्य घट जाता है। आयात की सापेक्षता में निर्यात अधिक सस्ते हो जाते है। इसे समीकरण के रूप में दिखाया जा सकता है -

$$x + B = M + I_f$$

जहाँ x = निर्यात, M = आयात

I_f = विदेशी निवेश

B = विदेश से उधार लेने को व्यक्त करते है।

अथवा, $x - M = I_f - B$

अथवा, $(x - M) - (I_f - B) = 0$

यह समीकरण बताता है कि भुगतान-शेष सन्तुलन में है। चालू लेखा के धनात्मक शेष का उसके पूंजी लेखा का ऋणात्मक शेष पूर्ण रूप से क्षतिपूर्ति कर देता है, और उल्टा भी। लेखांकन की दृष्टि से, भुगतान-शेष हमेशा सन्तुलन में होता है। इसे निम्न समीकरण के सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है-

$$C + S + T = C + I + G + (x - M)$$

अथवा $Y = C + I + G + (x - M)$

$(\because Y = C + S + T)$

जहाँ, C = उपभोग व्यय, S = घरेलू बचत

T = कर प्राप्तियाँ, I = निवेश व्यय

G = सरकारी व्यय, x = वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात

M = वस्तुओं तथा सेवाओं के आयात को व्यक्त करता है।

ऊपर दिए गए समीकरण में C+S+T सकल राष्ट्रीय आय (GNI) अथवा राष्ट्रीय आय (Y) है और

$C + I + G = A$

जहाँ A को अवशोषण कहा जाता है। लेखांकन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि कुल घरेलू व्यय (C+I+G) बराबर हो और चालू आय (C+S+T) बराबर हो अर्थात A = Y तो घरेलू बचत (Sd) और घरेलू निवेश (I_d) भी बराबर होने चाहिए। इसी तरह आवश्यक है कि चालू खाते में निर्यात अतिरेक (x > M) को निवेश से बढ़ी हुई घरेलू बचत ($S_d > I_d$) क्षतिपूर्ति करते है। इस प्रकार लेखांकन की दृष्टि से, भुगतान शेष हमेशा सन्तुलन में होता है।

लेखांकन प्रणाली में, एक लेन-देन का अन्तः प्रवाह और बाह्य-प्रवाह क्रमशः क्रेडिट और डेबिट पक्षों में लिया जाता है। इसलिए क्रेडिट और डेबिट पक्ष सदैव सन्तुलन में होते है। यदि चालू लेखा में घाटा

हो तो इसे पूंजी लेखा में उतने ही अतिरेक द्वारा पूरा करके सन्तुलन किया जा सकता है इसके लिए विदेशी से उधार लेकर या विदेशी वित्तिय रिजर्व से और स्वर्ण निर्यात द्वारा पूंजी लेखा में अतिरेक उत्पन्न किया जा सकता है। चालू लेखा में अतिरेक होने पर इसके विपरीत पूंजी लेखा में घाटे द्वारा सन्तुलन लाया जा सकता है अतः इस दृष्टिकोण से भी "भुगतान - शेष सदैव सन्तुलन में होता है"

Dr Sandhya Rai